पलड़ा मित्तरां का ही भारी है

'हिन्दुस्तान,' 29 अप्रैल, 1988

□ शशिधर खां

फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा मित्तरां ने जब दोबारा चुनाव लड़ने की घोषणा की, तो उनके प्रमुख विरोधी दक्षिणपंथी गुट में खासी खलबली मच गई। कुछ सप्ताह पहले तक मित्तरां ने किसी को इसकी भनक तक नहीं लगने दी थी कि वे चुनाव मैदान में उतर सकते हैं। बार-बार पूछे जाने पर भी वे अपने इरादे के बारे में कुछ भी कहने से इंकार करते रहे थे। इसलिए उनके विरोधी लगभग अंधेरे में थे और अपने चुनाव-अभियान को ज्यादा गंभीरता से नहीं ले रहे थे।

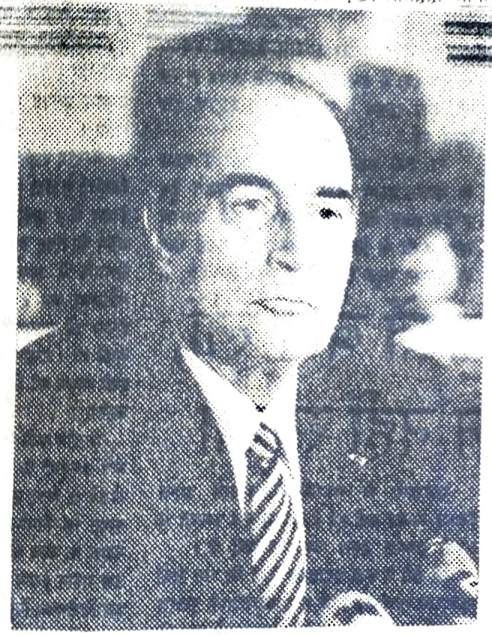
पर चुनाव से ठीक डेढ़ महीने पहले मित्तरां की उम्मीदवारी की अप्रत्याशित घोषणा से कनजर्वेटिव और दक्षिणपंथी दलों में राष्ट्रपति-पद के प्रत्याशी एकाएक अंडरएस्टिमेट में पड़ गए। समय इतना कम रह गया था कि नए सिरे से अभियान-कार्यक्रम तैयार करना उनके लिए मुश्किल हो गया। मित्तरां के मैदान में आने से पहले, मुकाबला वर्तमान प्रधानमंत्री जाक शिराक और भूतपूर्व प्रधानमंत्री रेमां बार के बीच था। मित्तरां ने एकाएक उस नक्शे को बदल दिया। निर्वाचन के पहले दौर में विजयी होने से मित्तरां का राष्ट्रपति बनने की संभावना और भी अधिक बढ़ गई है। पहले दौर में ही उन्हें ३४ प्रतिशत मत प्राप्त हुए हैं जबकि उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी शिराक इस दौड़ में काफी पीछे चल रहे हैं।

यों कहने को नौ उम्मीदवार राष्ट्रपति-पद के लिए अपने भाग्य की आजमाइश कर रहे हैं, मगर टक्कर मुख्य रूप से राष्ट्रपति फ्रांस्वा मित्तरां और प्रधानमंत्री शिराक के बीच है। रेमां बार तीसरे नंबर पर हैं। बातसकीवादी आरलेत लेगिए भी चुनाव लड़ रही हैं। फ्रांस के इतिहास में वे एकमात्र महिला हैं जो दूसरी बार राष्ट्रपति पद की प्रत्याशी बनी हैं। मेरी हो पेन ने भी नामांकन पत्र भरा है। पिछले वर्ष जब अमरीका के राष्ट्रपति-पद के उम्मीदवार गैरी हार्ट के डोना रीस के साथ नाजायज संबंधों की चर्चा हुई थी, तब से पेन भी काफी बदनाम हुए थे। उनकी पत्नी ने पति की इच्छा के विरुद्ध "प्लेबॉय" पत्रिका में अपनी आपत्तिजनक तस्वीर छपवाई थी। इससे ले पेन के व्यक्तित्व को काफी धक्का पहुंचा था और अभी भी वे खुल कर जनता के सामने उपस्थित होने में शरम महसूस कर रहे हैं।

समाजवादी पार्टी के फ्रांस्वां मित्तरां १९८१ में राष्ट्रपति बने थे। उन्होंने पश्चिमी खेमे में अंध समर्थक वालेरी जिस्कार्द देस्तां को हराया था। फ्रांस में वे वामपंथी गुट के प्रथम व्यक्ति थे, जो राष्ट्रपति बने और उस समय सारे यूरोप में इस बात को गंभीरतापूर्वक लिया गया था।

पिछले सात वर्षों में मित्तरां ने विश्व-राजनीति में अपनी धाक जमा ली है और बौद्धिक राजनेता के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की है। वे अपने को दलगत राजनीति से ऊपर मानते हैं और कहा करते हैं कि मेरे लिए देश और उसकी जनता, पार्टी से बढ़कर हैं। उनके शासनकाल में समाजवादी खेमे के लोग भले उनसे नाखुश हुए हों, पर जनता में उनकी लोकप्रियता बढ़ी है। इसका प्रमाण मिला पिछले महीने के जनमत संग्रह में, जिसमें सर्वाधिक मत उनके पक्ष में पड़े। अपनी नीतियों से मित्तरां ने सोवियत संघ की बेरुखी मोल ली है, पर अमरीका, ब्रिटेन व पश्चिम जर्मनी का सद्भाव प्राप्त किया है।

६ अप्रैल से राष्ट्रपति मित्तरां ने चुनाव-प्रचार शुरू किया। अपने घोषणापत्र में उन्होंने साफ कहा है कि किसी भी स्थिति में वे चुनाव-प्रचार में १.४ करोड़ डालर से ज्यादा खर्च नहीं करेंगे, हालांकि फ्रांसीसी चुनाव-कानून के तहत उन्हें २.३ करोड़ डालर तक खर्च करने का हक है। उन्होंने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी जाक



फ्रांस्वा मित्तरां

शिराक से भी ऐसा ही आग्रह किया है। उन्होंने तो एक अलग विभाग ही बना दिया है, जो इसकी जांच करेगा कि किस उम्मीदवार ने चुनाव-प्रचार में कितना खर्च किया। चूंकि वे अपनी जीत सुनिश्चित मानते हैं, सो अपने भाषणों में वे जोर देकर कह रहे हैं कि चुनाव के बाद यह जांच-विभाग अपना काम करेगा। यही नहीं, उन्होंने अपने चुनाव-प्रचार की शुरुआत ही प्रधानमंत्री शिराक की आलोचना से की। उनकी राय में शिराक बेतहाशा पैसा प्रचार पर फूंक रहे हैं और इस तरह जनता का पैसा बरबाद कर रहे हैं।

मित्तरां ने कई महत्वपूर्ण वादे किए हैं। उन्होंने कहा है कि चुनाव जीतते ही सबसे पहले वे नेशनल असेंबली में इसके लिए संविधान-संशोधन का प्रस्ताव रखेंगे कि राष्ट्रपति का कार्यकाल सात वर्ष से घटाकर पांच वर्ष कर दिया जाए। इसका उद्देश्य वे यह बताते हैं कोई राष्ट्रपति दो बार से अधिक चुनाव न लड़ सके। किसी भी व्यक्ति का दस वर्ष से ज्यादा राष्ट्रपति पद पर बने रहना वे उचित नहीं मानते। फ्रांस के राष्ट्रपति के लिए सात वर्ष के कार्यकाल का प्रावधान १८७५ में तीसरे गणतंत्र का संविधान बनाते समय किया गया था।

सामाजिक समस्याओं पर भी जनमत-संग्रह कराने की घोषणा मित्तरां ने की है। अगर ऐसा हो सका तो यह दूसरा महत्वपूर्ण संवैधानिक संशोधन होगा। वैसे इसकी व्यवस्था द गाल ने १९६८ में [illegible] सत्ता संभालने के बाद की थी, मगर उन्होंने इसे लागू [illegible] की सरकार तथा उनकी पार्टी के अनुवर्तियों ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। इस जोरदार शिगूफे से मित्तरां ने एक तीर से दो शिकार किए हैं। एक ओर इसका उद्देश्य जनता का दिल जीतना था, तो दूसरी ओर यह जाक शिराक को करारी चपत थी, जो कि द गाल के पक्के अनुयायी हैं।

महत्वाकांक्षी जाक शिराक

राष्ट्रपति-पद के दूसरे नंबर के उम्मीदवार और वर्तमान प्रधानमंत्री जाक शिराक अत्यंत महात्वाकांक्षी हैं और दलगत राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी भी। १९८६ में उन्होंने संसद में अपनी दक्षिणपंथी रिपब्लिकन पार्टी को बहुमत दिलवाकर अपने को कुशल संगठनकर्ता साबित कर दिया, जिससे मित्तरां उन्हें प्रधानमंत्री बनाने को मजबूर हुए। उसी समय से शिराक की मित्तरां से ठनी हुई है। राष्ट्रपति की राय लिए बिना ही उन्होंने कर्मचारियों के वेतन बढ़ा दिए और निकारागुआ तथा पश्चिम एशिया के संबंध में मित्तरां की इच्छा के विरुद्ध कई निर्णय लिए।

शिराक ने अपने चुनाव-भाषणों में मित्तरां के व्यक्तित्व और उनकी राष्ट्रीय नीति की आलोचना करने का कोई जोरदार मुद्दा न पाकर उनके चुनाव-पोस्टर के आकार और उसमें प्रयुक्त रंगों पर आक्षेप उठाया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने अपने चुनाव-पोस्टर में लाल, उजले और नीले रंगों का प्रयोग किया है। यह गैरकानूनी है, क्योंकि ये तीनों राष्ट्रीय झंडे के रंग हैं और कानून चुनाव-प्रचार के दौरान राष्ट्रीय झंडे के इस्तेमाल की अनुमति नहीं देता। उन्होंने यह मामला अदालत में ले जाने की धमकी भी सार्वजनिक रूप से दी। समाजवादी पार्टी के महासचिव ने उनके आक्षेप का खंडन करते हुए कहा है कि चुनाव प्रचार आरंभ करने से पहले वे पोस्टर हटा दिए गए थे।

शिराक को कहीं-कहीं यह भी कहते सुना गया है कि जिस फ्रांसीसी कंपनी ने ईरान को हथियार बेचे थे, उसने समाजवादी पार्टी को इसके एवज में मोटी रकम दी थी। उनका आक्षेप है कि दिखावे के लिए भले ही केवल १.४ करोड़ डालर खर्च करने की बात कही जा रही हो, पर वास्तव में परोक्ष रूप से काफी खर्च चुनाव-अभियान शुरू करने से पहले ही मित्तरां की ओर से किया जा चुका है। शिराक सार्वजनिक उद्योगों को निजी उद्यमियों के हाथ में सौंप देने के पक्ष में हैं। वे भूतपूर्व राष्ट्रपति जार्ज पांपिदू के अंध समर्थक हैं। कुछ लोग तो उन्हें जार्ज पांपिदू का उत्तराधिकारी ही मानते हैं।

रेमां बार

रेमां बार मुख्यतः अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। कनजर्वेटिव दल के समर्थन पर भूतपूर्व राष्ट्रपति वालेरी जिस्कार्द देस्तां ने उन्हें कुछ दिनों के लिए अपना प्रधानमंत्री बनाया [illegible] दोनों के [illegible] के कारण बार ने इस्तीफा [illegible] सक्रिय [illegible] आने से पहले बार [illegible] विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे। वे भी शिराक की नीतियों के कटु आलोचक हैं—विशेषतः उनकी आर्थिक नीतियों के। वे मानते हैं कि सार्वजनिक उद्योगों को निजी उद्यमियों के हाथ में सौंप देने से लाखों लोग बेरोजगार हो जाएंगे, क्योंकि निजी उद्यमियों का एकमात्र उद्देश्य मुनाफा कमाना होगा और वे कम से कम मजदूरों से ज्यादा से ज्यादा काम लेने की नीति अपनाएंगे। विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में बार की बातें बड़े ध्यान से सुनी जाती हैं।

रेमां बार का शिराक के साथ यह समझौता था कि किसी तीसरे उम्मीदवार के अखाड़े में उतरने पर दोनों में से एक अपनी उम्मीदवारी वापस ले लेगा। मगर मित्तरां के मैदान में उतर जाने के बावजूद बार डटे हुए हैं और उनका इरादा अंत तक डटे रहने का है। उनके निकटवर्तियों का कहना है कि वे चाहते हैं कि अगर जीतना ही है तो मित्तरां जीतें। शिराक की हार-जीत की संभावनाओं पर वे कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते।

जिस चीज से इस बार का राष्ट्रपति-चुनाव विशेष दिलचस्प बन गया है वह उम्मीदवारों की पत्नियों का चुनाव-प्रचार में शरीक होना। अमरीका में तो यह सामान्य बात है, मगर फ्रांस के लिए इसकी बहुत अहमियत है। इसलिए कि आज भी वहां सक्रिय राजनीति में उतरना या राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होना पुरुषों का ही काम समझा जाता है। मगर है यह बात कुछ अजीब ही, क्योंकि अगर महिला राष्ट्रपति-पद की उम्मीदवार हो सकती है, तो फिर वह चुनाव-प्रचार क्यों नहीं कर सकती?

गत २४ अप्रैल को तीन करोड़ मतदाताओं द्वारा अपने मताधिकार का प्रयोग के बाद अब मतदान का दूसरा आखिरी दौर ८ मई को होगा। वैसे दूसरा दौर लगभग निश्चित माना जा रहा है क्योंकि सन् १९६१ से १९८१ तक एक भी राष्ट्रपति चुनाव में ऐसा नहीं हुआ कि प्रथम मतदान में ही किसी प्रत्याशी ने स्पष्ट बहुमत पा लिया हो।